ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 42 | कुल पृष्ठ-8 | 25 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2021 | दयानन्दाब्द 198 | सृष्टि सम्वत् 1960853122 | सम्वत् 2078 | मा.कृ.-06

आर्य समाज में प्रारम्भ हुआ 'वेद श्रीः' सम्मान

उत्तर प्रदेश के टाण्डा में श्रीमती मीना देवी आर्या धर्मार्थ न्यास ने किया कार्यक्रम का आयोजन

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय सहित आर्य जगत की सात विभूतियों को दिया गया 'वेद श्रीः' सम्मान

वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित विद्वानों को किया जायेगा 'वेदश्रीः' सम्मान से विभूषित

– आनन्द कुमार आर्य

10 नवंबर 2021 को "श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास", टांडा के तत्वावधान में विद्वत् सम्मान समारोह का आयोजन डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा में किया गया, जिसकी अध्यक्षता माननीय न्यायमूर्ति श्री युत् सज्जन सिंह कोठारी जी ने की, मुख्य अतिथि के रुप में श्री दीनदयाल गुप्त जी (चेयरमैन डॉलर इंडस्ट्रीज कोलकाता) शोभायमान रहे। इस भव्य व दिव्य विद्वत् सम्मान समारोह में सात विद्वत् जनों का सम्मान किया गया। सर्वप्रथम श्रीमद् दयानन्द न्यास के प्राचार्य, देश भर में आठ गुरुकुलों को संचालित करने वाले, आर्य ज्योति (संस्कृत व हिंदी) पत्रिका के संपादक, बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी वैदिक विरक्त मंडल के प्रधान श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द जी, तत्पश्चात उत्तर प्रदेश, हरियाणा व राजस्थान में शराबबंदी आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले, अंग्रेजी हटाओ–रोजगार दिलाओ जैसे आन्दोलन का सफल नेतृत्व करने वाले, सती प्रथा के विरुद्ध व आतंकवाद विरोधी आंदोलन के अग्रणी नेतृत्वकर्ता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उसके पश्चात गुरुकुल आर्य कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद की संस्थापिका, अनेक संस्कृत व हिंदी पुस्तकों की लेखिका, कुशल संपादिका और देश के विभिन्न अंचलों में वैदिक धर्म का पूर्ण निष्ठा से प्रचार–प्रसार करने वाली महान विदुषी आचार्या प्रियंवदा वेद भारती जी, तत्पश्चात राम जन्मभूमि वाद में प्रमुख अधिवक्ता के रूप में न्याय दिलाने वाले, कोलकाता में हजारों निर्मम गौमाता की अनधिकृत की जा रही हत्या पर हाई कोर्ट कोलकाता से अपने तर्क पूर्ण बहस द्वारा न्याय दिलाने वाले, महर्षि दयानन्द के कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को महर्षि द्वारा मान्य द्वितीय संस्करण को अक्षुण्य रखने हेतु अजमेर के न्यायालय में लंबित वाद की वकालत करने वाले, महर्षि दयानन्द भक्त प्रसिद्ध अधिवक्ता डॉ. परमेश्वर नाथ मिश्र जी, उसके पश्चात देश और विदेश में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द की दुंदुभी बजाने वाले, आर्य जगत के गौरव, वैज्ञानिक विद्वान, वेदों के प्रमाणिक हस्ताक्षर आचार्य श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, तत्पश्चात वैदिक धर्मोपदेशक, आर्य संस्कृति के समुपासक, संपादक, आर्य जगत के प्रख्यात लेखक, राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं को प्रकाशित कराने के महारथी, "वैदिक पथ" मासिक पत्रिका के संपादक, धारा प्रवाह ओजस्वी वक्ता सम्माननीय डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी तथा सातवें नम्बर पर वैदिक शंका के समाधानकर्ता, वैदिक संस्कार व कर्मकांड प्रक्रिया मर्मज्ञ, पंडित दीनानाथ शास्त्री जी सहित सभी के सम्मान में सर्वप्रथम पगड़ी पहनाकर, पट्टिका व शाल से स्वागत के पश्चात क्रमशः प्रशस्ति पत्र प्रदान कर "वेद श्रीः" उपाधि से अलंकृत कर "वेद श्रीः" स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। इस अवसर पर सभी विद्वानों को 51–51 हजार रुपये की नकद राशि भी प्रदान की गई।

"वेद श्रीः" सम्मान समारोह आर्य समाज टांडा के वर्तमान प्रधान व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पूर्व कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जी के पुत्र/पुत्रियों श्री मनीष आर्य, श्री अमिताभ आर्य, श्रीमती मीता जायसवाल व श्रीमती ममता जायसवाल जी द्वारा अपनी पूज्या माता श्रीमती

मीना आर्या जी की स्मृति में गठित "श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास" के नाम से संस्थान के बहु–आयामी उद्देश्यों में प्रतिवर्ष आर्य जगत के दो विद्वानों का सम्मान करने के निर्णय के आधार पर इस वर्ष स्वर्गीय मीना जी के परिचितों व उनकी जिनमें विशेष आस्था थी, उन उपर्युक्त सात विद्वत्जनों का चयन कर उनका सम्मान किया गया। आर्य जगत में विद्वत् सम्मान समारोह की महत्ता को ध्यान में रखकर न्यास ने अत्यंत उच्च स्तरीय रूप में विद्वत् सम्मान समारोह प्रारम्भ किया। कार्यक्रम के अंत में न्यास के अध्यक्ष श्री आनंद कुमार आर्य जी ने सम्मानित होने वाले समस्त विद्वत्जनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और आमंत्रित आर्य जगत के प्रख्यात सन्यासियों, विद्वानों व उपदेशकों तथा उपस्थित समस्त आर्य जनों के प्रति आभार व्यक्त किया और उन्होंने कहा कि आर्य समाज के सम्मेलनों में वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित विद्वानों को 'वेदश्रीः' सम्मान से विभूषित किया जाना चाहिए। इसका प्रयास न्यास के सभी अधिकारी करेंगे।

सभी सम्मान प्राप्त विभूतियों ने आयोजक मंडल का हार्दिक आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों आर्यजनों ने इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

उपासना और मूर्तिपूजा

– स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वेद में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। वेद तो घोषणापूर्वक कहते हैं –

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश। (यजुर्वेद 32.3)

अर्थात् जिसका नाम महान यशवाला है उस परमात्मा की कोई मूर्ति, तुलना, प्रतिकृति प्रतिनिधि नहीं है।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस देश में मूर्तिपूजा कब प्रचलित हुई और किसने चलाई?

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में प्रश्नोत्तर रूप में इस सम्बन्ध में लिखते हैं –

प्र. मूर्तिपूजा कहां से चली?

उ. जैनियों से।

प्र. जैनियों ने कहां से चलाई?

उ. अपनी मूर्खता से।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, मूर्तिपूजा बौद्धकाल से प्रचलित हुई। वे लिखते हैं – ''यह एक मनोरंजक विचार है कि मूर्तिपूजा भारत में यूनान से आई। वैदिक धर्म हर प्रकार की मूर्ति तथा प्रतिमा-पूजन का विरोधी था। उस काल (वैदिकयुग) में देवमूर्तियों के किसी प्रकार के मंदिर नहीं थे। ....प्रारम्भिक बौद्ध धर्म इसका घोर विरोधी था .... पीछे से स्वयं बुद्ध की मूर्तियाँ बनने लगी। फारसी तथा उर्दू भाषा में प्रतिमा अथवा मूर्ति के लिए अब भी बुत शब्द प्रयुक्त होता है जो बुद्ध का रूपांतर है।'' (हिन्दुस्तान की कहानी पृ. 172)

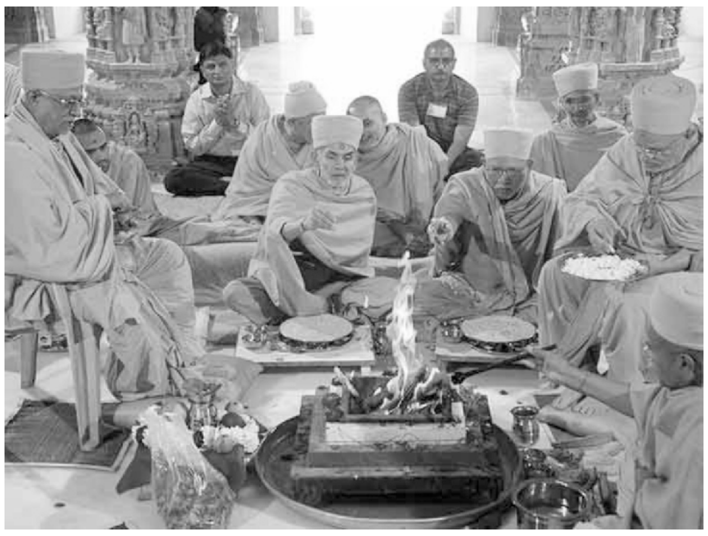

''नहीं, नहीं मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है, पुनः इस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है।

एक अन्य स्थल पर वे लिखते हैं –

''ग्रीस और यूनान आदि देशों में देवताओं की मूर्तियां पुजती थीं। वहाँ से भारत में मूर्तिपूजा आई। बौद्धों ने मूर्तिपूजा आरम्भ की। फिर अन्य जगह फैल गई।'' (विश्व इतिहास की झलक – पृ. 694)

इन उद्धरणों से इतना निश्चित है कि मूर्तिपूजा हमारे देश में जैन-बौद्धकाल से आरम्भ हुई। जिस समय भारत में मूर्तिपूजा आरम्भ हुई और लोग मन्दिरों में जाने लगे तो भारतीय विद्वानों ने इसका घोर खण्डन किया। मूर्तिपूजा खण्डन में उन्होंने यहाँ तक कहा –

गजैरापीड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमन्दिरम् (भविष्य पु. प्रतिसर्गपर्व 3-28-53) अर्थात् यदि हाथी मारने के लिए दौड़ा आता हो और जैनियों के मन्दिर में जाने से प्राणरक्षा होती हो तो भी जैनियों के मन्दिर में नहीं जाना चाहिए।

लेकिन ब्राह्मणों, उपदेशकों और विद्वानों के कथन का साधारण जनता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उन लोगों ने भी मन्दिरों का निर्माण किया। जैनियों के मन्दिरों में नग्न मूर्तियाँ होती थी। इन मन्दिरों में भव्यवेश में भूषित हार-श्रृंगारयुक्त मूर्तियों की स्थापना और पूजा होने लगी।

भारत में पुराणों की मान्यता है लेकिन पुराणों में भी मूर्तिपूजा का घोर खण्डन किया गया है।

यस्यात्मबुद्धि कुणपे त्रिधातुके। स्वधी कलत्रादिषु भौम इज्यधी।।

यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कहिर्चिज्। जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः।। (श्रीमद भागवत 10-84-13)

अर्थात् जो वात, पित और कफ तीन मलों से बने हुए शरीर में आत्मबुद्धि रखता है, जो स्त्री आदि में स्वबुद्धि रखता हैं, जो पृथ्वी से बनी हुई पाषाण मूर्तियों में पूज्य बुद्धि रखता है, ऐसा व्यक्ति गोखर गौओं का चारा उठाने वाला गधा है।

न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामया।

ते पुनन्त्यापि कालेन विष्णुभक्ताः क्षणादहो।। (देवी भागवत 9-7-42)

अर्थात्, पानी के तीर्थ नहीं होते तथा मिट्टी और पत्थर के देवता नहीं होते। विष्णुभक्त तो क्षण मात्र में पवित्र कर देते हैं। परन्तु वे किसी काल में भी मनुष्य को पवित्र नहीं कर सकते।

दर्शन शास्त्रों में भी मूर्तिपूजा का निषेध है

न प्रतीके न ही सः (वेदान्त दर्शन 4-1-4)

अर्थात् - प्रतीक में, मूर्ति आदि में परमात्मा की उपासना नहीं हो सकती, क्योंकि प्रतीक परमात्मा नहीं है।

संसार के सभी महापुरुषों और सुधारकों ने भी मूर्तिपूजा का खण्डन किया है।

श्री शंकराचार्य जी परपूजा में लिखते हैं –

पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम्।

स्वच्छस्य पाद्यमघर्य च शुद्धस्याचमनं कुतः।।

निर्लेपस्य कुतो गन्धं पुष्पं निर्वसनस्य च।

निर्गन्धस्य कुतो धूपं स्वप्रकाशस्य दीपकम्।।

अर्थात्, ईश्वर सर्वत्र परिपूर्ण है फिर उसका आह्वान कैसा?जो सर्वाधार है उसके लिए आसन कैसा?जो सर्वथा स्वच्छ एवं पवित्र है उसके लिए पाद्य और अर्घ्य कैसा?जो शुद्ध है उसके लिए आचमन की क्या आवश्यकता?

निर्लेप ईश्वर को चन्दन लगाने से क्या?जो सुगन्ध की इच्छा से रहित है उसे पुष्प क्यों चढ़ाते हो?निर्गन्ध को धूप क्यों जलाते हो?जो स्वयं प्रकाशमान है उसके समक्ष दीपक क्यों जलाते हो?

चाणक्य जी लिखते हैं –

अग्निहोत्र करना द्विजमात्र का कर्त्तव्य है। मुनि लोग हृदय में परमात्मा की उपासना करते हैं। अल्प बुद्धि वाले लोग मूर्तिपूजा करते हैं। बुद्धिमानों के लिए तो सर्वत्र देवता है।

(चाणक्य नीति 4-19)

कबीरदास जी कहते हैं ...

पाहन पूजे हरि मिले तो हम पूजे पहार।

ताते तो चाकी भली पीस खाए संसार।।

दादु जी कहते हैं –

मूर्त गढ़ी पाषण की किया सृजन हार।

दादू सांच सूझे नहीं यूं डूबा संसार।।

गुरुनानकदेव जी का उपदेश है –

पात्थर ले पूजहि मुगध गंवार।

ओहिजा आपि डूबो तुम कहा तारनहार।।

कुछ अज्ञात लोगों के कथन –

पत्थर को तू भोग लगावे वह क्या भोजन खावे रे।

अन्धे आगे दीपक बाले वृथा तेल जलावे रे।।

यह क्या कर रहे हो किधर जा रहे हो।

अंधेरे में क्यों ठोकरें खा रहे हो।।

बनाया है स्वयं जिसको हाथों से अपने।

गजब है! प्रभु उसको बतला रहे हो।।

बुतपरस्तों का है दस्तूर निराला देखो।

खुद तराशा है मगर नाम खुदा रखा है।।

सच तो यह है खुदा आखिर खुदा है और बुत है बुत।

सोच! खुद मालूम होगा यह कहाँ और वह कहाँ।।

महर्षि दयानन्द जी का कथन –

''मूर्ति जड़ है, उसे ईश्वर मानोगे तो ईश्वर भी जड़ सिद्ध होगा। अथवा ईश्वर के समान एक और ईश्वर मानों तो परमात्मा का परमात्मापन नहीं रहेगा। यदि कहो कि प्रतिमा में ईश्वर आ जाता है तो ठीक नहीं। इससे ईश्वर अखण्ड सिद्ध नहीं हो सकता। भावना में भगवान् है यह कहो तो मैं कहता हूँ कि काष्ठ खण्ड में इक्षु दण्ड की और लोष्ठ में मिश्री की भावना करने से क्या मुख मीठा हो सकता है?मृगतृष्णा में मृग जल की बहुतेरी भावना करता है परन्तु उसकी प्यास नहीं बुझती है। विश्वास, भावना और कल्पना के साथ सत्य का होना भी आवश्यक है।'' (दयानन्द प्रकाश – पृ. 264)

प्रश्न – मूर्ति पूजा सीढ़ी है। मूर्तिपूजा करते-करते मनुष्य ईश्वर तक पहुँच जाता है।

उत्तर – मूर्तिपूजा परमात्मा प्राप्ति की सीढ़ी नहीं है। सीढ़ी तो गंतव्य स्थान पर पहुँचने के पश्चात् छूट जाती है परन्तु हम देखते हैं कि एक व्यक्ति आठ वर्ष की आयु में मूर्तिपूजा आरम्भ करता है और अस्सी वर्ष की अवस्था में मरते समय तक भी इसी दलदल से निकल नहीं पाता।

एक बच्चा दूसरी कक्षा में पढ़ता है, उसे पांच और छः का जोड़ करना हो तो वह पहले स्लेट अथवा कापी पर पांच लकीरें खींचता है फिर उसके पास छः लकीरें खींचता है, उन्हें गिनकर वह ग्यारह जोड़ प्राप्त करता है। परन्तु तीसरी अथवा चौथी कक्षा में पहुंचने पर वह उंगलियों पर गिनने लग सकता है और पांचवीं-छठी कक्षा में पहुंचकर वह मानसिक गणित से ही जोड़

''मूर्ति जड़ है, उसे ईश्वर मानोगे तो ईश्वर भी जड़ सिद्ध होगा। अथवा ईश्वर के समान एक और ईश्वर मानों तो परमात्मा का परमात्मापन नहीं रहेगा। यदि कहो कि प्रतिमा में ईश्वर आ जाता है तो ठीक नहीं। इससे ईश्वर अखण्ड सिद्ध नहीं हो सकता। भावना में भगवान् है यह कहो तो मैं कहता हूँ कि काष्ठ खण्ड में इक्षु दण्ड की और लोष्ठ में मिश्री की भावना करने से क्या मुख मीठा हो सकता है?मृगतृष्णा में मृग जल की बहुतेरी भावना करता है परन्तु उसकी प्यास नहीं बुझती है। विश्वास, भावना और कल्पना के साथ सत्य का होना भी आवश्यक है।''

लेता है। यदि मूर्तिपूजा सीढ़ी होती तो मूर्तिपूजक उन्नति करते-करते मन में ध्यान करने लग जाते परन्तु ऐसा होता नहीं है, अतः महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है :-

''नहीं, नहीं मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है, पुनः इस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश , एकादश समुल्लास)

ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ी तो है महर्षि पतंजलि कृत – ''अष्टांग योग'' – जिसके अंग – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि है। विद्वान, ज्ञानी और योगीजन ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ियाँ हैं, पाषाण आदि नहीं।

(साभार स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत उपासना और मूर्ति पूजा)

मानव शरीर परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति

- अशोक आर्य

यह मानव शरीर (मानव) परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसे अशरफडल मखलूकात (प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ) कहा गया है। नीतिकार के अनुसार आहार, निद्रा, भय तथा संतानोत्पादन आदि की क्रियाएं तो मनुष्यों एवं पशुओं में समान ही होती हैं, किन्तु मनुष्य अपने कार्यों को धर्माधर्म के विवेकपूर्वक करता है। वस्तुतः मानवेतर समस्त योनियां भोग योनियां हैं। केवल मनुष्य ही कर्म करने में स्वतंत्र है। वह चाहे तो शुभ कर्म कर सकता है चाहे तो अशुभ। शुभ तथा अशुभ, उचित तथा अनुचित का विभेद करने हेतु परमात्मा ने अत्यन्त कृपापूर्वक उसे विवेक प्रदान किया है तथा विवेक का प्रयोग कर सत्य और असत्य, शुभ और अशुभ को जानने के लिए मानव सृष्टि के आदि में ही समस्त ज्ञान भण्डार वेद भी प्रदान किया। अब यह मानव के ऊपर निर्भर है कि वेदानुकूल मार्ग पर चलकर, धर्म अर्थ काम मोक्ष के पुरुषार्थ चतुष्टय को जीवन में धारण कर जीवात्मा के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर लें। इसीलिए महाभारत के महर्षि वेदव्यास जी ने कहा - ''न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं किंचित् ''अर्थात् सृष्टि के प्राणियों में मनुष्य से बढ़कर और कोई नहीं है।''

मनुष्य द्वारा आज ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में जो कल्पनातीत उन्नति की गई है उसे देखकर यह सत्य भी प्रतीत होता है। साहित्य, संस्कृति, कला, उद्योग, कल-कारखानों, पुलों, आवागमन एवं संचार के साधनों, कृषि, भवनों, सुखदायी संसाधनों आदि के क्षेत्र में उसने आश्चर्यजनक उपलब्धि की है। पर क्या वह सुखी है? आज प्रायः मनुष्य दुखी है, आशांकित हैं। सर्वत्र आपाधापी मची है। हर कोई दूसरे का गला काटने को तत्पर है। नैतिकता सर्वत्र तिरोहित है। यह इसलिए कि उपरोक्त सारे निर्माण जिसके लिए हैं उस मनुष्य के निर्माण की तरफ किसी का कोई ध्यान नहीं है।

वेद मां ने हमें यह निर्देश दिया ''मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'' - मनुष्य बनो और दिव्य संतानों को उत्पन्न करो। स्पष्ट है कि मात्र मानव योनि प्राप्त करने से ही कोई मनुष्य नहीं बन जाता। उसके लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। मनुष्यता के पर्याय दिव्य गुणों को धारण करना पड़ेगा। मनुष्य का मानस इस तरह का निर्मित करना होगा, उसके आस पास का वातावरण इस प्रकार का निर्मित करना होगा कि वह बुराईयों से दूर हट, भद्र को ग्रहण करने में तत्पर रहे।

गर्भावस्था व गर्भकाल का मानव निर्माण के संदर्भ में महत्व -

मानव निर्माण की इस सम्पूर्ण योजना की पहली सीढ़ी सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत की हैं बालक का जब जन्म होता है जब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। एक प्रकार के संस्कार तो वह हैं जो वह जन्म-जन्मान्तरों के अपने साथ लाता है। दूसरे प्रकार के, जिन्हें वह अपने माता पिता से वंश परम्परा में प्राप्त करता है। ये संस्कार अच्छे बुरे दोनों प्रकार के होते हैं। मानव निर्माण योजना में इन पूर्व से प्राप्त बुरे संस्कारों को विनष्ट करना तथा नवीन बुरे संस्कारों को ग्रहण करने से रोकना शामिल है। ऋषियों ने इसका उपाय संस्कार बताया है। महर्षि जी ने स्व लिखित संस्कार विधि में 16 संस्कारों का विशद वर्णन किया है। माता-पिता से बुरे संस्कार बालक में न आवें इस हेतु माता-पिता को स्वयं सारी बुराइयों से बचते हुए अपने जीवन का एक सच्चे मानव के रूप में निर्माण करने के साथ-साथ गर्भाधान, गर्भकाल के समय उन समस्त नियमों का पालन करना होगा जिससे कि गर्भ में विकसित बालक में बुरे संस्कारों का प्रवेश न्यूनतम हो। क्योंकि बालक पिता के अंग से, हृदय से उत्पन्न होता है। उसका प्रतिरूप होता है।

अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधि जायसे (शतपथ 14/9/4/8)।

एतरेय के ऋषि ने कहा ''स अग्र एवं कुमारं जन्मनः अग्रे अधि भावयति'' (ऐतरेयोपनिषद् 2/3) पिता अपनी संतान के उत्पन्न होने के पूर्व उसका जैसा निर्माण करना चाहता है, नक्शा बन जाता है। जन्म लेने से पूर्व ही पिता के जैसे विचार, जैसा चिन्तन और जैसा संकल्प होता है उसी प्रकार का जीवात्मा उसके वीर्य में प्रवेश कर जाता है।

इसी प्रकार संतान का हृदय माता के बीज से उत्पन्न होता है। और रस लाने ले जाने वाली धमनियों से माता के हृदय से जुड़ा रहता है। इसीलिए सुश्रुत संहिता में लिखा है -''गर्भवती स्त्री को जिस बात में अनिच्छा होती है उसकी संतान की भी उस बात में अनिच्छा होती है। जिस बात में गर्भवती स्त्री की इच्छा रहा करती है उस बात में संतान की भी इच्छा बन जाती है।''

इसीलिए जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में डालकर उसका संस्कार करता है, उसी प्रकार बालक जब माँ के गर्भ में होता है, उसी समय से संस्कारों के माध्यम से उसके दुर्गुणों को निकाल कर सद्गुणों का आधान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

यहाँ मनुस्मृति का यह श्लोक दृष्टव्य है-

यादृशं भजते नारी सुतं सूते तथाविधम्। तस्मात् प्रजाविशुद्ध ध्यर्थ स्त्रियं रक्षेत् प्रयत्नतः।।9।9।।

अर्थात् ''गर्भवती स्त्री जिस प्रकार की तस्वीर मन में खींच लेती है उसी प्रकार की संतान को जन्म देती है। इसीलिए उत्तम संन्तान के लिए स्त्री को ऐसे वातावरण में रखना चाहिए जिससे सन्तान उत्तम एवं शुद्ध विचारों वाली बने।

जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तब माँ की मनोवृत्ति का सन्तान के निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें प्राचीनकाल के इतिहास के प्रमाण मिलते हैं, जैसे -

1. महाभारत में पढ़ने को मिलता है कि अभिमन्यु, माता सुभद्रा के गर्भ में चक्रव्यूह तोड़ने के संस्कारों को लेकर पैदा हुआ।

2. माता मदालसा देवी के बारे में कहा जाता है कि वह अपनी गर्भावस्था में लोरी गाया करती थीं -

''शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि संसारमाया परिवर्जितोऽसि'' हे मेरे बेटे! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निर्दोष है, संसार की माया से रहित है। इन संस्कारों के कारण उसकी तीन सन्तानें - विक्रान्त, सुबाहु और अरिदमन ब्रह्मर्षि बन गई। तीनों पुत्र राज पाट का मोह त्यागकर वनों को चले गये। यह स्थिति देख महाराज (उसके पति) ने कहा इस प्रकार वंश कैसे चलेगा? क्या सबको योगी बना दोगी। तब चौथे पुत्र के उत्पन्न होने के समय मदालसा ने अपनी मानसिक स्थिति बदल दी, फलतः चौथा पुत्र सर्वगुण सम्पन्न क्षत्रिय हुआ। माता मदालसा ने उसका नाम ''अलर्क'' रखा। माता ने उसे राजनीति का उपदेश दिया। उसे लोरी देते हुए कहती थीं -

धन्योऽसि रे यो वसुधाम शत्रुरेकश्चिरं पालयिताऽसि पुत्र।

तत्पालनादस्तु सुखोय भोगो धर्मात् फलं प्राप्स्यसि चासरत्वम्।।

अर्थात्, हे पुत्र! तू धन्य है जो अकेला ही शत्रुओं से रहित होकर इस पृथिवी का पालन कर रहा है। धर्मपूर्वक प्रजापालन से तुझे इस लोक में सुख और मरने पर मोक्ष की प्राप्ति होगी।

3. पाश्चात्य देशों में भी इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं। कहते हैं कि अमेरिका के प्रेसीडेण्ट गारफील्ड का हत्यारा गीटू जब माता के गर्भ में था, तब माता ने गर्भपात कर उसकी हत्या कर डालने का प्रयत्न किया था। वह गर्भपात तो नहीं कर सकी, परन्तु माता के गर्भ में स्थित उस सन्तान पर जो संस्कार पड़ चुके थे, उन्होंने गीटू को हत्यारा बना दिया।

4. नेपोलियन के विषय में कहा जाता है कि जब वह माता के पेट में था तब उसकी माता सेनाओं की परेड देखने में लगी रहती थी। जब वह सैनिकों को परेड करते और सैनिकों को सैनिक गीत गाते सुनती थी, तब उसका रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता था। गर्भावस्था में पड़े इन संस्कारों ने नेपोलियन को एक महान योद्धा बना दिया।

मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तक फ्रॉयड ने कहा कि बचपन में, जब बच्चे को मां, गोद में लोरियां दे रही होती है, तब उस पर जो संस्कार पड़ जाते हैं वे मिटाये नहीं मिटते, वे आजन्म साथ रहते हैं। वैदिक ऋषियों का तो यहां तक कहना था कि माँ अपनी गोद में ही नहीं, अपने गर्भ में उस पर जो संस्कार डाल रही होती है, वे गोद में दिये संस्कारों से भी प्रबल होते हैं। गोद में बैठा बालक तो माँ से अलग शरीर में आ जाता है, गर्भ में पल रहा बालक तो माँ का ही शरीर होता हे, माँ के शरीर तथा मन का अभिन्न अंग होता है, इसलिए बालक पर अपने संस्कारों की अमिट निशानी डालने के लिए उस समय माँ को सचेत तथा सचेष्ट होना उचित है।

इसी कारण वैदिक मनीषियों ने निर्देश दिए हैं कि मानव निर्माण करना है तो न सिर्फ गर्भाधान तथा गर्भकाल में विशिष्ट कर्तव्यों को ध्यान में रखना ही होगा वरन् उससे पूर्व गृहस्थ में प्रवेश करने वाले, सन्तानोत्पत्ति के कर्तव्यों का निर्वहन करने वाले पति पत्नी को स्वयं के जीवन में भी मनुष्योचित उदात्त आदर्शो को स्थान देना होगा, ताकि कम से कम उनके माध्यम से बच्चे में बुरे संस्कार न जावें। साथ ही जन्म के पश्चात् बालक के चारो तरफ, गुरुकुल में आचार्यों का सानिध्य प्राप्त करने से पूर्व, इस तरह की शिक्षा का वातावरण सृष्ट करने का दायित्व भी माता-पिता का है ताकि बालक के पूर्व जन्मों के संचित बुरे संस्कार दग्ध हो सकें तथा अच्छे संस्कार प्रभावशाली हो सकें। यह सारी बातें मानव जीवन निर्माण की प्रथम सीढ़ी (सोपान) निश्चित रूप से समझी जा सकती हैं जिनका निर्देश महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास में किया है।

- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

आर्य समाज टांडा, अंबेडकर नगर (उत्तर प्रदेश) का 130वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक परम्पराओं को अपनाकर ही भारत विश्व गुरु बन सकता है
– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली है
– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

वेद सृष्टि का संविधान है
– वेदप्रकाश श्रोत्रिय

आजादी के आंदोलन में आर्य समाज की विशेष भूमिका रही
– स्वामी आदित्यवेश

आर्य समाज टांडा, अंबेडकर नगर का चार दिवसीय 130वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 9, 10, 11 व 12 नवंबर 2021 को डी.ए.वी. एकेडमी के विशाल प्रांगण में बड़े धूमधाम के साथ समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासियों, प्रख्यात विद्वानों, भजनोपदेशकों की उपस्थिति ने टाण्डा को आर्यों का दर्शनीय स्थल बना दिया।

चार दिनों तक निरंतर चले इस वार्षिकोत्सव में नित्य प्रति वैदिक यज्ञ, भजनोपदेश और आध्यात्मिक प्रवचन से ज्ञान, भक्ति और कर्म की अजस्र धारा प्रवाहित हुई। उत्सव का शुभारंभ 9 नवम्बर, 2021 को गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश) की प्राचार्या डॉ. प्रियंवदा "वेद भारती" जी के ब्रह्मत्व व उनके गुरुकुल की दो ब्रह्मचारिणी सुश्री प्राची और सुश्री माद्री के वेद पाठ से हुआ। इस अवसर पर यजमान के रूप में न्यायमूर्ति श्रीयुत सज्जन सिंह कोठारी (पूर्व लोकायुक्त–राजस्थान) सपत्नीक शोभायमान रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया। अपराह्न 1 बजे बाबू मिश्री लाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज, डी.ए.वी. एकेडमी व आर्य कन्या महाविद्यालय के हजारों छात्र/छात्राओं के साथ उत्सव में पधारे आर्य सन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों व जनपद तथा आस–पास की दर्जनों आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नेतृत्व में विशाल शोभायात्रा भी निकाली गई। जिसमें आर्य समाज के नारों द्वारा पूरा कस्बा गुंजायमान हो गया।

प्रत्येक दिन अलग–अलग सत्रों में विभिन्न कार्यक्रम के रूप में क्रमशः भारत विश्व गुरु की ओर – आर्य समाज की भूमिका (अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी), नारी सशक्तिकरण (वेदों में नारी अध्यक्षता श्रीमती अनिता कोठारी पत्नी न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी, मुख्य अतिथि श्रीमती रेखा मिश्रा पत्नी डॉ. परमेश्वर नाथ मिश्र अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, संयोजिका डॉ. प्रशिषा मिश्रा), शंका समाधान (अध्यक्षता डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री, समाधानकर्ता श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय), वेद सम्मेलन व आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

टाण्डा में शोभा यात्रा का भव्य आयोजन किया गया जिसका नेतृत्व संन्यासीवृन्द एवं विद्वत्‌वृन्द ने किया। टाण्डा चौक में शोभा यात्रा का भव्य स्वागत नगर के हिन्दू, मुस्लिम एवं सिक्ख भाईयों द्वारा किया गया। यहाँ सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन विशेष रूप से प्रेरणादायक रहा जिसकी उपस्थित समस्त प्रशासनिक अधिकारियों एवं गणमान्य नागरिकों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

प्रतिदिन महायज्ञ के उपरांत स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी के आध्यात्मिक व्याख्यान व श्री कैलाश कर्मठ, श्री सत्यपाल सरल, श्री केशव देव आर्य के भजनों का कार्यक्रम 11 बजे तक चलता था। रात्रि कालीन सत्र में नारी सशक्तिकरण सम्मेलन डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। सम्मेलन में महिलाओं से सम्बन्धित विविध विषयों पर वक्ताओं द्वारा प्रकाश डाला गया।

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी तथा डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री के सान्निध्य में शंका–समाधान का विशेष कार्यक्रम चला जिसमें उन्होंने सभी प्रश्नों का उत्तर देकर प्रश्नकर्ताओं तथा श्रोताओं की शंकाओं का समाधान किया।

आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से मैं आग्रह करता हूँ कि वे सम्पूर्ण आर्य जगत् का नेतृत्व करें जिसकी इस समय नितान्त आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी ही वर्तमान में देश–विदेश में घूमकर दिन–रात मेहनत करके आर्य समाज के संगठन को सक्रिय कर रहे हैं। उनमें नेतृत्व की योग्यता एवं क्षमता है। अतः हम उन्हें तन–मन–धन से इस कार्य में सहयोग देंगे और पूरे देश का आर्य समाज

शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस के अवसर पर गरीब, असहाय एवं जरूरतमंदों को राशन प्रदान किया गया

मानवता की सेवा करना ही सही मायने में ईश्वर उपासना है – ओम प्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के निर्वाण दिवस के अवसर पर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर, पंजाब की ओर से श्री ओम प्रकाश आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में गरीब, असहाय एवं जरूरतमंद परिवारों को राशन प्रदान करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर ऋषि निर्वाण दिवस गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ का ब्रह्मतव आचार्य दयानन्द शास्त्री जी ने किया। इस यज्ञ एवं राशन वितरण समारोह में सर्वश्री/श्रीमती सुनीता पसाहन, कमलेश रानी, नीलम, राकेश आर्या आदि ने विशेष रूप से भाग लेकर आहुतियाँ समर्पित की। इस अवसर पर ऋषि जीवन पर आधारित भजनों को सुलोचना आर्या व सुनीता पसाहन ने गाकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि श्री जवाहर लाल मेहरा प्रधान, आर्य समाज मॉडल टाऊन, श्री मुनीष खन्ना मंत्री आर्य समाज मॉडल टाऊन, श्री बालकृष्ण शर्मा अध्यक्ष नशा विरोधी समाज संगठन ने उपस्थित होकर जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरित किया।

उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि हम सब एक ईश्वर की सन्तान हैं और सारा मानव समाज एक परिवार है, मानव मात्र के दुःख एवं कष्ट को निवारण करने के लिए प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति को प्रयत्नशील रहना चाहिए। मानवता की सेवा ही ईश्वर उपासना का द्वार है। इन्हीं उद्देश्यों के साथ राशन वितरण के कार्य को करते हुए मानवता की सेवा में यह संस्था सदैव तत्पर है। इस अवसर पर श्री अर्जुन कुमार, श्री अशोक वर्मा, श्री नरेश पसाहन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संघर्षशील, कर्मठ समाजसेवी, आर्यनेता श्री राम सिंह आर्य जी की प्रथम पुण्यतिथि पर हजारों लोग उपस्थित हुए

धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

संघर्षशील, समाजसेवी एवं कर्मठता के धनी थे राम सिंह आर्य

– स्वामी आर्यवेश

राम सिंह आर्य राजस्थान में कुरीतियों के खिलाफ हमेशा आन्दोलनरत रहे

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

उनका पूरा जीवन आर्य समाज एवं जन–कल्याण के कार्यों के लिए समर्पित रहा

– मनीषा पंवार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के उपमंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान, आर्य वीरदल राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष और विभिन्न आन्दोलनों से जुड़े प्रसिद्ध समाजसेवी आर्य नेता श्री राम सिंह आर्य जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर 2 नवम्बर, 2021 को सुमेर उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर के प्रांगण में प्रेरणा सभा का आयोजन आर्य वीर दल राजस्थान के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, विधायक लूणी श्री महेन्द्र सिंह विश्नोई, राजसीकों के निदेशक श्री सुनील परिहार, पूर्व सांसद श्री बद्रीराम जाखड़, जे.डी.ए. के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी सहित अनेकों संगठनों के प्रतिनिधि तथा समाजसेवी गणमान्य महानुभावों ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपने विचार रखे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कर्मठ, संघर्षशील, विचारक एवं क्रांतिकारी समाजसेवी आर्य नेता श्री राम सिंह आर्य जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने अपने सद्कर्मों के माध्यम से जीवन–पर्यन्त मानवता की सेवा कर मनुर्भव का बहुत सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी श्री रामसिंह आर्य ने जीवन–पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए कार्य किया। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गये अनेकों आन्दोलनों जैसे सती प्रथा आन्दोलन, बंधुआ मजदूरों की मुक्ति का आन्दोलन, नाथद्वारा मंदिर प्रवेश आन्दोलन, कन्या भ्रूण हत्या विरोधी आन्दोलन, शराबबन्दी जैसे अनेकों आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई थी। श्री राम सिंह आर्य जी युवाओं के प्रेरणास्रोत थे, वे कुशल संगठक एवं जुझारू आर्यनेता थे। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत व भेदभाव मिटाने के लिए कठिन संघर्ष किया था। वे एक लेखक, ओजस्वी वक्ता तथा आर्यनेता के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने राजस्थान में आर्य युवा संगठन को मजबूत बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। आज वे हम सबके बीच भले ही नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा किये कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनके तप, त्याग, समर्पण एवं कर्मठता का जीता जागता उदाहरण है कि आज उनकी सुयोग्य सुपुत्री मनीषा पंवार राजस्थान में जोधपुर शहर से विधायक हैं और प्रदेश सरकार में उनकी सक्रिय भागीदारी है। ऐसे महान आर्य नेता से हम सबको प्रेरणा लेकर समाज एवं राष्ट्र के लिए कार्य करने की आवश्यकता है, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भाई राम सिंह आर्य जी ने आर्य समाज के माध्यम से राजस्थान में जो आन्दोलनात्मक स्वरूप तैयार किया वह अपने आपमें अविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने पूरे राजस्थान में विशेष रूप से जोधपुर में युवाओं को जो शिक्षा–दीक्षा आर्य वीरदल के माध्यम से दी है वह आज भी उसी सुदृढ़ता के साथ कार्य करती हुई दिखाई दे रही है। उनके द्वारा किये गये कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस श्री गोपाल कृष्ण व्यास जी ने कहा कि श्री राम सिंह आर्य जी एक कर्मवीर एवं कर्मठ आर्यनेता थे। उन्होंने हमेशा से मानवता के लिए संघर्ष किया और अपना पूरा जीवन समाजसेवा में समर्पित कर दिया। ऐसे महान आर्यनेता विरले ही होते हैं। आज उनकी प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए यह जो जन–सैलाब उमड़ा है यह उसका जीता–जागता सबूत है कि वे आम जन में कितने लोकप्रिय थे। मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

जोधपुर शहर से विधायक श्रीमती मनीषा पंवार ने अपने पिता स्व. श्री राम सिंह आर्य जी की प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वे जीवन पर्यंत आर्य समाज एवं राष्ट्र की सेवा की बात किया करते थे और वे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज संगठन के माध्यम से समाजसेवा एवं परोपकार के कार्य करते रहे। उनके द्वारा किये जा रहे समाजसेवा के कार्यों को देखते हुए हम पले–बढ़े और आज उन्हीं के द्वारा प्राप्त संस्कारों के कारण मैं राजस्थान के जोधपुर शहर से विधायक हूँ। मुझे गर्व है कि मैं ऐसे पिता की बेटी हूँ जिन्होंने हमें समाजसेवा एवं परोपकार के कार्यों को करने के लिए प्रेरित एवं संस्कारित किया। आज वे हम सबके बीच भले ही नहीं हैं परन्तु उनके विचार एवं कार्य हमारे दिलो दिमाग में हमेशा गूंजते अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 5 का शेष

संघर्षशील, कर्मठ समाजसेवी, आर्यनेता श्री राम सिंह आर्य जी की प्रथम पुण्यतिथि

रहते हैं। मैं पूरी ईमानदारी से समाज के दबे–कुचले लोगों के लिए कार्य करूँगी। क्योंकि हमारे पूज्य पिता हमेशा कहा करते थे कि समाज में बराबरी और समानता की बात होनी चाहिए। उन्होंने अनेक सामाजिक बुराईयों के खिलाफ राजस्थान में आन्दोलन चलाये तथा राष्ट्रीय स्तर के आन्दोलनों में हमेशा भाग लेते रहे हैं। उनका निधन अचानक एवं असमय हो गया जिसका हमें बहुत दुःख है, परन्तु उनके द्वारा छोड़े गये कार्यों को पूरा करने में मैं अपना पूरा योगदान करूँगी।

राज्यसभा सांसद श्री राजेन्द्र गहलोत ने कहा कि राम सिंह आर्य जी का जुड़ाव सभी धर्मों के लोगों से रहा। वे राजस्थान में सामाजिक आन्दोलनों के अग्रिम पंक्ति के नेता थे, उन्होंने हमेशा समाज में समरसता बनाये रखने के लिए कार्य किया और राष्ट्र की उन्नति के लिए अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

पूर्व सांसद श्री बद्रीराम जाखड़ ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे हमेशा जनकल्याण की बात किया करते थे। वे कभी अपने लिए कुछ नहीं कहा करते थे बल्कि समाज की उन्नति के लिए हमेशा प्रयासरत रहे।

इस अवसर पर लूणी विधायक श्री महेन्द्र सिंह विश्नोई ने कहा कि श्री राम सिंह आर्य ने समाज में सद्भाव बनाये रखने तथा युवाओं को संस्कारित करने का कार्य किया।

जी.डी.एस. के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी ने कहा कि श्री राम सिंह आर्य जी हमेशा आमजन को जोड़ने का कार्य किया।

राजसीकों के निदेशक श्री सुनील परिहार ने कहा कि श्री राम सिंह आर्य जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। वे हमेशा समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि श्री राम सिंह आर्य जी हमेशा हम सबको याद आते रहेंगे। वे सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर भाग लिया करते थे तथा राजस्थान में युवाओं को आर्य वीरदल के माध्यम से संस्कारित करके महर्षि दयानन्द जी के सपनों को पूरा करने का आजीवन प्रयास करते रहे। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक महानुभावों ने कार्यक्रम में अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर स्व. श्री राम सिंह आर्य जी के जीवन कार्यों को स्लाइड शो के माध्यम से उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व को प्रदर्शित किया गया और प्रेरणा स्थल पर स्व. श्री राम सिंह आर्य जी से जुड़ी स्मृतियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें उनके द्वारा समय–समय पर किये गये सामाजिक कार्यों को प्रदर्शित किया गया।

श्रद्धांजलि सभा में संत राम प्रसाद, सेनाचार्य अचलानन्द गिरि, गुरुद्वारा के सरदार जयपाल सिंह, पूर्व महापौर डॉ. ओम कुमारी गहलोत, पूर्व महापौर श्री रामेश्वर दाधिच, पूर्व उप महापौर श्री मजीद गौरी और श्री अब्दुल गनी फौजदार, पूर्व कुलपति प्रो. बी.एस. राजपुरोहित, पूर्व कुलपति प्रो. गंगाराम जाखड़, श्री भंवर लाल आर्य, श्री चांदमल आर्य, आर्य समाज जालौर के प्रधान श्री दलपत सिंह आर्य, श्री कृष्ण आर्य, श्री शिवदत्त आर्य, शिवगंज से श्री हरदेव आर्य, श्री हरिसिंह आर्य, श्री जितेंद्र आर्य, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री गजेसिंह आर्य, प्रो. डी.एस. खींची, मारवाड़ मुस्लिम एज्यूकेशन सोसाइटी के श्री अतीक अहमद, निगम में नेता प्रतिपक्ष श्री गणपत सिंह चौहान, समाजसेवी श्री जसवंत सिंह कुशवाहा, श्री राहुल पाराशर, निगम दक्षिण आयुक्त श्री अरूण पुरोहित, उत्तर आयुक्त श्री राजेन्द्र सिंह, श्री शम्भू सिंह मेड़तिया, एम.आई.ए. के श्री भंवरलाल चोपड़ा, श्री उमेश लीला, मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एस.एस. राठौड़, श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य सहित अनेक सहयोगी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम की सफलता में आर्य वीरदल जोधपुर के सैंकड़ो कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य समाज टांडा, अंबेडकर नगर (उत्तर प्रदेश) का 130वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उनके नेतृत्व में संगठित होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री आनन्द कुमार आर्य जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आर्य समाज के कार्य को संगठन के सिद्धान्तों के अनुरूप हमेशा समर्पित भाव से करता रहूँगा। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज टाण्डा तथा मिश्रीलाल कन्या इण्टर कॉलेज एवं डी.ए.वी. एकेडमी पूरे आर्य जगत् में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। यहाँ की विशेषता यह है कि आधे से ज्यादा छात्र–छात्राओं की संख्या मुस्लिम समुदाय से सम्बन्धित है। पिछले कई दशकों से यह शिक्षण संस्थाएं सामाजिक एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जिस संकल्प के साथ कार्य कर रही हैं ऐसा उदाहरण अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। मुस्लिम बाहुल्य आबादी होने के बावजूद टाण्डा के लोग इन संस्थाओं के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता का भाव रखते हैं और अपने बच्चों को इन्हीं संस्थाओं में पढ़ाते हैं। स्वामी जी ने कहा कि इन सब कार्यों को पूर्ण करने के लिए श्री आनन्द कुमार जी ने जो अथक परिश्रम किया है उसके लिए मैं उन्हें साधुवाद एवं अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ कि वे हमेशा समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना सक्रिय योगदान इसी प्रकार से देते रहें। वैदिक सिद्धान्तों पर चलकर ही मनुष्य का कल्याण होना सम्भव है। स्वामी जी ने कहा कि वैदिक परम्पराओं को अपनाकर ही भारत विश्व गुरु बन सकता है

गुरुकुल गौतम नगर के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली है। मैं आर्य समाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से अपील करता हूँ कि गुरुकुलों का अधिक से अधिक सहयोग करके गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने में अपना–अपना योगदान दें, जिससे पूरे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को और अधिक तीव्र गति प्रदान की जा सके।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि वेद सृष्टि का संविधान है। इसलिए हमें प्रत्येक कार्य को वेद में वर्णित वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर करना चाहिए।

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी तथा गुरु बिरजानन्द जी के जीवन को हमें आदर्श मानकर आगे बढ़ना चाहिए। स्वामी दयानन्द जी ने जिस भावना एवं मन्तव्यों के साथ आर्य समाज संगठन की स्थापना की थी हम सबको उन्हीं सिद्धान्तों पर चलकर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का कार्य करना चाहिए तभी सही मायने में मानव निर्माण किया जा सकेगा।

अमेठी से पधारे डॉ. दीनानाथ शास्त्री ने कहा कि आज स्वाध्याय की महती आवश्यकता है। हमें प्रतिदिन स्वाध्याय का संकल्प लेना चाहिए। आचार्या प्रियम्बदा वेद भारती ने कहा कि बेटियों की शिक्षा के लिए सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संघर्ष किया और महिलाओं के लिए शिक्षा–दीक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। महर्षि के संघर्ष के कारण ही महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करके अनेक बड़े–बड़े पदों पर आसीन हैं, इसलिए हमें महर्षि के ऋण को कभी भूलना नहीं चाहिए।

अपने ओजस्वी एवं क्रांतिकारी उद्‌बोधन में मिशन आर्यावर्त के निदेशक युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि देश को आजाद कराने के लिए आजादी के आंदोलन में आर्य समाज ने सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए देश को आजाद कराया। स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आजादी में शहीद हुए शहीदों को भुलाया नहीं जा सकता। आज हम आजाद भारत में रह रहे हैं, परन्तु वर्तमान समय में हमारा देश अनेक समस्याओं से ग्रसित होता चला जा रहा है। इसलिए आर्य समाज को पुनः अपने तेजस्वी स्वरूप के अनुरूप कार्य करना होगा तभी समाज में व्याप्त हो रही अनेक कुरीतियों को मिटाया जा सकेगा। हम सबको मिलकर आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलकर कार्य करना होगा तभी शहीदों के स्वप्नों को साकार किया जा सकेगा। इनके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों से आये विद्वानों व आर्य नेताओं ने अपने विचार रखे। वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम अत्यन्त हर्ष एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

फेफड़े स्वस्थ रखने के उपाय

– मोनिका अग्रवाल

जब हम डॉक्टर के पास जाते हैं, तो डॉक्टर सबसे पहले स्टेथोस्कोप से हमारी धड़कन सुनता है और धड़कन को सुनने के लिए डॉक्टर हमसे लंबी गहरी सांस लेने को कहता है, क्योंकि ये सांसें हमारी सेहत के बारे में बहुत कुछ बताती हैं।

चलती रहती हैं सांसें

श्वास खुद व खुद चलती रहती हैं। हम सांस लेने के तरीके के बारे में नहीं सोचते। हम एक दिन में लगभग 30 हजार बार सांस लेते हैं। सांस लेने और छोड़ने का काम करते है। हमारे फेफड़े यानी लंग्स। हमारे शरीर में दो फेफड़े होते हैं, जो हमारे सीने में सीधी तरफ राइट रिब केज के पीछे और दूसरी तरफ हमारे हार्ट के पीछे स्थित होते हैं। फेफड़ों का यह जोड़ा हमारे जीवन को चलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फेफड़ों का मुख्य काम वातावरण से प्राणवायु लेकर उसे रक्त परिसंचरण में प्रवाहित करना और रक्त से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर उसे वातावरण में छोड़ना है, ताकि हमारे सभी अंगों को जीवित रहने के लिए महत्त्वपूर्ण ईंधन प्राप्त होता रहे।

लंग्स मंथ का मतलब

अक्टूबर महीने को हेल्दी लंग मंथ के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि यही वह ऑर्गन है, जो हमें जिन्दा रखता है। यह जानना जरूरी है कि लंग की सेहत हमारे लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है।

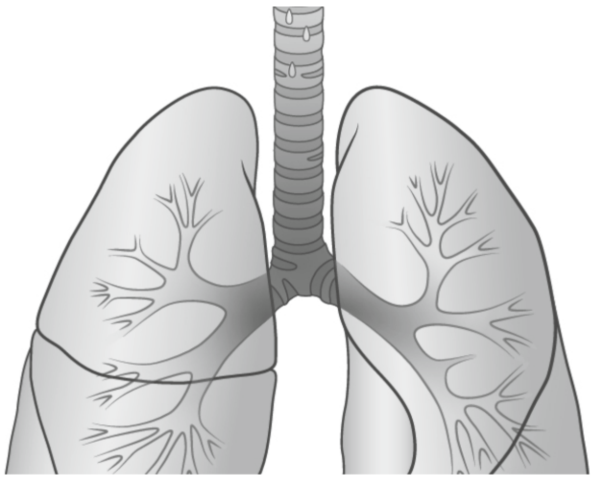

हृदयाघात से बचाव

फेफड़े रक्त के थक्कों और वायु के बुलबुले के गठन को छानकर वायु के प्रवाह को रोकते हैं, जो हृदय के लिए घातक हो सकता है।

रक्त स्तर

फेफड़े रक्त के स्तर को बनाए रखने में दिल के साथ मिलकर काम करते हैं। इसी कारण रक्त स्तर संतुलित रहता है।

फेफड़ों को अधिक देखभाल की जरूरत

हमारी बाहरी दुनिया प्रदूषण, कार्बन उत्सर्जन, गिरते हुए हरे आवरण, जलवायु परिवर्तन और कई अन्य गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है। इन बाहरी स्थितियों को देखते हुए फेफड़ों को सांस लेने की प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में फेफड़ों का अधिक ख्याल रखने की जरूरत महसूस होती है।

तम्बाकू से बचें

आप जानते हैं कि सिगरेट का धुआं फेफड़ों के कैंसर का कारण बनता है। धूम्रपान करने वालों में फेफड़ों के कैंसर की आशंका दूसरों की तुलना में लगभग 80 प्रतिशत अधिक होती है। अप्रत्यक्ष रूप से भी सिगरेट के धुएं को अंदर लेने से कैंसर की आशंका बढ़ जाती है। फेफड़ों से सम्बन्धित अन्य बीमारियों में क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज, क्रोनिक ब्रोन्काइटिस, टीबी और निमोनिया शामिल है।

विषाक्त पदार्थों से बचें

हमें इंडोर और आउटडोर विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने से बचना चाहिए। वायु प्रदूषण हमारे लिए घातक है। जरा, हम मास्क पहने लोगों के बारे में सोचें। वाहनों, कारखानों और विमानों के उत्सर्जन के कारण हवा में बढ़ता प्रदूषकों का स्तर हवा में मौजूद ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर रहा है। इस कारण सांस लेना मुश्किल होता जा रहा है। ऐसे में कई तरह की बीमारियाँ हो रही हैं, जिनसे बचने के लिए लोगों को मास्क का प्रयोग करना पड़ रहा है।

क्या उपाय अपनाएँ

एयर प्यूरीफायर का प्रयोग :– हमारा वातावरण बहुत से अदृश्य धूल कणों से भरा है, जो एलर्जी और सांस की बीमारियों के लिए जिम्मेदार हैं। एयर ह्यूमिडिफायर, एयर प्यूरीफायर आदि की मदद से अपने आस–पास के वातावरण को शुद्ध रखें। घर में भी प्रदूषण फैलाने वाली कई चीजें हैं। इसलिए घर में वेंटिलेशन का ध्यान रखें।

संक्रमण को दूर रखें :– सामान्य संक्रमण से बचने के लिए स्वच्छता सम्बन्धी आदतों का पालन करना अच्छा होता है। इनमें हाथ धोने, अपने दांतों को नियमित रूप से दिन में दो बार ब्रश करने, रोगों से बचने के लिए टीके लगवाने, उन लोगों से बचने, जो कुछ समय से सर्दी और फ्लू से पीड़ित हैं आदि आदतें शामिल हैं।

नियमित रूप से व्यायाम करें :– कोई भी एरोबिक या कार्डियोवैस्कुलर व्यायाम रोज करें, ताकि हृदय और फेफड़े मजबूत रहें। व्यायाम से शरीर की ऑक्सीजन उपयोग करने की क्षमता में सुधार होता है और फेफड़े बेहतर तरीके से काम करते हैं, जिस कारण विषाक्त कार्बन डाइऑक्साइड शरीर से बाहर निकलती हैं। इसलिए जुम्बा, योग, तैराकी, जॉगिंग या पैदल चलने की आदत बनायें और नियमित रूप से इनका पालन करें। इन उपायों से काफी हद तक फेफड़ों को सुरक्षित रख सकते हैं।

पौष्टिक भोजन करें :– एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर खाद्य पदार्थ फेफड़ों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं। फूलगोभी, ब्रोकली, बंदगोभी आदि खाने से फेफड़ों के कैंसर होने की आशंका काफी कम हो जाती है।

लहसुन और प्याज :– लहसुन–प्याज में एलिसिन नाम का तत्त्व होता है, जो सूजन कम करता है और फेफड़ों में घुसे प्रदूषक कणों को खत्म कर देता है।

सेब :– सेब में फ्लेवोनॉयड्स, विटामिन–ई और विटामिन–सी तीनों तत्त्व पाये जाते हैं, जो फेफड़ों को बेहतर तरीके से काम करने में मददगार साबित होते हैं।

अदरक :– अदरक का एंटी इनफ्लेमेट्री गुण सूजन, जलन जैसी दिक्कतों को तो दूर करता ही है, ये फेफड़ों में घुसे प्रदूषक तत्त्वों को शरीर से बाहर कर हमें निरोगी बनाता है।

अनार :– अनार में एंटीऑक्सिडेंट्स पाये जाते हैं। एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं से विषैले पदार्थ को निकाल बाहर करते हैं। ऐसे में ये जहां फेफड़ों को कई सारी बीमारियों से बचाता है, वहीं फेफड़ों में ट्यूमर बनने से भी रोकता है।

हल्दी :– हल्दी का नियमित प्रयोग फेफड़ों को रोगों से बचाता है, क्योंकि इसका एंटी इनफ्लेमेट्री गुण और करक्यूमिन नाम का तत्त्व कैंसर कोशिकाओं को खत्म करता है।

गाजर :– गाजर विटामिन–ए और विटामिन–सी का अच्छा स्रोत होने के साथ ही एंटीऑक्सिडेंट का भी अच्छा स्रोत है, जो फेफड़ों की सेहत के लिए जरूरी है।

– हिन्दुस्तान से साभार

ओ३म्

स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित
प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान के 50 वर्ष पूर्ण होने पर

गुरुकुल धीरणवास का 50वाँ वार्षिक महोत्सव

दिनांक : 4 व 5 दिसम्बर, 2021 (शनिवार व रविवार) स्थान : गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा)

सान्निध्य : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
कुलपति, गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा)

कार्यक्रम

4 दिसम्बर, 2021

यज्ञ, भजन, प्रवचन
प्रातः 9 से 10.30 बजे तक
ध्वजारोहण
प्रातः 10.30 बजे
समाज सुधार सम्मेलन
प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक
आर्य रत्न सम्मान समारोह
दोपहर 1 से 2 बजे तक
शिक्षा सम्मेलन
दोपहर 2 से 4 बजे तक
व्यायाम सम्मेलन
सायं 4 से 5 बजे तक
सामूहिक सन्ध्या
सायं 6 बजे
भजन सन्ध्या
सायं 7.30 से 9.30 बजे तक

5 दिसम्बर, 2021

यज्ञ, भजन, प्रवचन
प्रातः 8 से 10 बजे तक
ध्वजारोहण
प्रातः 10 बजे
आजादी का अमृत महोत्सव
(राष्ट्र रक्षा सम्मेलन)
प्रातः 10.30 से 1 बजे तक
सम्मान समारोह
दोपहर 1 से 2.30 बजे तक
व्यायाम सम्मेलन
दोपहर 2.30 बजे

विशेष : बाहर से आने वाले सभी आर्यजनों के भोजन एवं आवास की सम्पूर्ण व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की जायेगी।

निवेदक
समस्त अधिकारी एवं सदस्य, गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरि.)
सम्पर्क सूत्र :- 9416489210, 9416355493, 9817146902, 9354840454

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल का 57वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

16 से 19 नवम्बर, 2021 तक सामवेद पारायण यज्ञ का हुआ आयोजन

वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन को चलाने का लें संकल्प – स्वामी आर्यवेश

अपने जीवन में आये दुर्व्यसन छोड़ने से ही जीवन सफल होगा – स्वामी आनन्दवेश

गुरुकुल शुक्रताल, उत्तर प्रदेश में आयोजित 57वें वार्षिक महोत्सव में अनेक विद्वानों, सन्यासियों, भजनोपदेशकों एवं क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन भी किया गया। 16 नवम्बर को प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम का समापन 19 नवम्बर, 2021 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्व शांति सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन, नारी सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सहित अनेक सम्मेलनों का विशेष आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न उपदेशको, वक्ताओं एवं क्षेत्र के विशेष लोगों ने भाग लिया। जिसमें मुख्यतया मिशन आर्यावर्त के निदेशक युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विरजानन्द एडवोकेट, दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी, संस्थापक अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी दिल्ली, स्वामी विश्वानंद जी, स्वामी शिवानंद योग तीर्थ, स्वामी चन्द्रदेव, श्री मनोकांत शास्त्री, श्री पवन वीर शास्त्री, भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य बिजनौर, श्री राजवीर आर्य, डॉ आनन्द कुमार महासचिव राष्ट्र निर्माण पार्टी दिल्ली आदि गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि यदि आप अपने जीवन को सफल करना चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो। क्योंकि वेद ही सृष्टि का संविधान हैं। वेद ही जीवन की कुंजी हैं। वेद के आधार पर अपने जीवन को चलाकर हम अपना उद्धार कर सकते हैं। जब तक यह देश वेदों से जुड़ा रहा तो दुनिया का सिरमौर रहा और विश्व गुरु कहलाया। यदि दुबारा हम विश्व गुरु बनना चाहते हैं तो हमें धार्मिक अंधविश्वास, पाखण्ड, नशाखोरी, अश्लीलता, जातिवाद, सांप्रदायिकता, शोषण तथा नारी उत्पीड़न मुक्त समाज बनाना पड़ेगा।

आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासी स्वामी आनन्दवेश जी ने कहा कि स्नान से पाप नहीं कट सकते क्योंकि हमें सब अच्छे व बुरे कर्मों का फल मिलेगा। इसलिए यहाँ आए हो तो अपने दुर्गण व दुर्व्यसन छोड़ने का संकल्प करके जाएं। अपने जीवन की बुराइयों को यदि आप छोड़ देंगे और जीवन को पवित्र बना लेंगे तो आपका परिवार व समाज खुशहाल होगा। इस कार्यक्रम को विभिन्न नेताओं ने भी सम्बोधित किया।

व्यायाम सम्मेलन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अनेक योग साधना प्रदर्शन किए जिसमें मुख्य थे आसन, व्यायाम सरिया मोड़ना, जंजीर तोड़ना, मोगरी घुमाना, मलखंब आसन, रस्सी पर आसन, आग का गोला आदि के करतब दिखाकर पंडाल में मौजूद लोगों को चकित कर दिया। सामवेद पारायण महायज्ञ जिसके मुख्य यजमान श्री उदयवीर आर्य शाहपुर, श्री देवेन्द्र कुमार कैल मुजफ्फरनगर, महाशय श्री तेजपाल आर्य निरगाजनी, श्री सहदेव आर्य, श्री मदनपाल चेयरमैन, श्री वरुण कुमार भोकरहेड़ी, श्री यशवीर भोकरहेड़ी, डॉ. अनिल कुमार ककरौली, श्री श्रद्धानन्द, श्रीमती प्रतिभा, श्रीमती सुनील सोनीपत, डॉ. मोहर सिंह मुजफ्फरनगर, श्री प्रवीण आर्य बसेड़ा, आर्य समाज एवं सत्संग मंडल बसेड़ा, श्री मांगेराम आर्य एवं बाबरी सत्संग मंडल बाबरी, बच्चों के माता–पिता आदि यजमान बनें। आचार्य यजवीर (देहरादून) ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया। महायज्ञ में वेदपाठी के रूप में आचार्य प्रेम शंकर, आचार्य मनोकांत शास्त्री, आचार्य कमलकांत शास्त्री, सिद्धार्थ, सूरज शास्त्री आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतिथियों एवं गंगा स्नान उत्सव पर दूर दराज से आए श्रद्धालु लोगों के भोजन व्यवस्था के लिए प्रतिदिन भंडारे की व्यवस्था संस्था के दानी महानुभावों के सहयोग से सुचारू रूप से की गई। उत्सव की सफलता हेतु संस्था के अध्यक्ष/संचालक प्रबंधक स्वामी आनन्दवेश जी महाराज (बलदेव नैष्ठिक) संस्था के प्रधान श्री विजय कुमार, मंत्री श्री सत्यवीर सिंह, मुख्य अधिष्ठाता आचार्य इन्द्रपाल, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर कुच्छल कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री राणा सिंह, श्री विकास शास्त्री, श्री सोमवीर, श्री सोनी जैन, श्री तुषार वर्मा, श्री अर्जुन सिंह, श्री संजय सैनी सहित अन्य कार्यकर्ताओं के योगदान से उत्सव बड़े ही सफल ढंग से पूर्ण हुआ। संस्था के प्रधान ने उत्सव की सफलता के लिए सभी को बधाई दी व गुरुकुल के छात्रों के पठन–पाठन, रहन–सहन, भोजन आदि व्यवस्था व रंगाई पुताई की आवश्यकता पर बल दिया। गुरुकुल भवन जो कि अत्यंत प्राचीन हो गया है उसके जीर्णोद्धार के लिए सभी से सहयोग की अपील की। गुरुकुल का 57वॉ वार्षिकोत्सव समारोह सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी 'अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान' से सम्मानित

'मानवसेवा प्रतिष्ठान' के तत्वावधान में गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में आर्यजगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी को अध्यात्म पथ पत्रिका के संपादक आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने 'अध्यात्म मार्तण्ड' सम्मान से सम्मानित किया। इस अवसर पर आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा – स्वामी आर्यवेश जी विलक्षण प्रतिभा के धनी, ऋषि पथ के पथिक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, ओजस्वी वक्ता, अनेकानेक शिष्यों के जीवन निर्माता, वेदादि शास्त्रों के प्रखर चिंतक, सरलता की प्रतिमूर्ति, आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी हैं। अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका की ओर से स्वामी आर्यवेश जी को अध्यात्म मार्तण्ड की मानद उपाधि से अलंकृत करने में हम हर्ष की अनुभूति करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से स्वामी जी के सुखी निरोग, अदीन, दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन की प्रार्थना करते हैं। अध्यात्म पथ पत्रिका द्वारा सम्मान स्वरूप स्वामी आर्यवेश जी को शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि प्रदान की गयी।

समारोह में स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी आनंदवेश जी, स्वामी आत्मानंद जी, नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के प्रधान श्री राम स्वरूप आर्य जी, दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानंद शास्त्री जी आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।